केरल यात्रा की डायरी

# यदि धरती पर स्वर्ग है तो...

अलका सरावगी

अगस्त के अन्तिम सप्ताह में केरल जाने का मौका मिला। मेरे उपन्यास ***कलिकथा वाया बाइपास*** के मलयालम अनुवाद के प्रकाशक के पैंतीस साल पूरे हुए थे। इस अवसर पर भाषण की तैयारी कर रही थी तो पता चला कि पचास प्रतिशत मलयालम भाषी औसतन रोज़ एक घण्टा किताब पढ़ते हैं।

कॉलेज के दिनों में हमारी अँग्रेज़ी की शिक्षिका मिसेज़ दासगुप्ता ने एक बार कहा था कि दुनिया का कोई दुख नहीं, जो एक अच्छी किताब और एक कप अच्छी कॉफी के साथ भुलाया न जा सकता हो। केरल में कॉफी की खेती तो खैर होती ही है, अब वहाँ के लोगों ने किताबों का साथ भी पा लिया है। तो अब हम कह सकते हैं कि वहाँ के लोगों के पास दुख से मुक्ति के सारे साधन हैं। और स्वर्ग तो आखिर वही जगह है जहाँ कोई दुख नहीं!

हमारी यात्रा शुरू हुई क्विलोन या किलोन नामक के प्राचीन समुद्री शहर से। यहाँ अष्टमुडी झील है। नक्शे पर देखो तो यह वाकई ऑक्टोपस की तरह आठ जगह से मड़ी हुई दिखती है। यूँ तो शहर की मुख्य सड़क पर गाड़ियों की चिल्ल-पों के बीच हमारा होटल था, किन्तु झील बिलकुल नज़दीक थी। होटल से निकलकर दाहिनी ओर मुड़ते ही वो नज़र आ गई। अष्टमुडी झील की जहाँ शुरुआत थी, वहाँ से झील की विशालता का अनुमान नहीं हो सकता था।

अगले दिन सुबह ऑटो वाला भाषा न समझने के कारण हमें अष्टमुडी झील के बगल वाले छोर की जगह आठ-दस किलोमीटर दूर वीरभद्र के मन्दिर के पास ले गया। वहाँ पहुँचकर लगा कि अच्छा ही हुआ जो उसने हमारी बात नहीं समझी। झील के नीले-से दूर-दूर तक फैले पानी में हल्की-हल्की लहरें पैदा करती ठण्डी हवा बह रही थी। झील पर बनी जेटी (पानी के कुछ अन्दर तक बना रास्ता) उसकी खूबसूरती को कई गुना बढ़ा रही थी, कुछ-कुछ वेनिस की याद दिलाती हुई।

क्विलोन छोड़कर अपने अगले पड़ाव टेक्कड़ी जाते समय हमने अष्टमुडी की एक अलग ही सुन्दरता देखी। एक ओर वह समुद्र से मिल रही थी और दूसरी ओर उसमें सघन हरे वृक्षों से लदे द्वीप थे। यह चलती गाड़ी से देखी गई एक झलक भर थी। उस समय लगा था कि अभी तो यात्रा की शुरुआत है, ऐसे दृश्य तो बहुत मिलेंगे। पर अब लगता है कि केरल के प्रसिद्ध बैकवाटर या समुद्र से जुड़ी झीलों का वह सबसे सुन्दर दृश्य था। हम समुद्री तट को छोड़कर पश्चिमी घाट की पहाड़ियों की तरफ चल पड़े। रास्ते छोटे-छोटे, शहर व गाँव हज़ारों-हज़ारों नारियल और केले के पेड़ों से,सजे थे। मुझे तीन रंग के केलों – हरे, पीले और लाल – से सजी फलों की दुकानें बहुत सुन्दर लगीं। यहाँ नारियल भी हरे और पीले दो रंगों के होते हैं। हमारे बंगाल में भी नारियल और केला बहुत होता है, पर शायद प्रकृति ने केरल में रंगों से कुछ खास तरह के खेल खेले हैं। सिर्फ रंगों से ही नहीं, स्वाद में भी लाल केला और पीले नारियल आम केला-नारियलों से काफी अलग होते हैं। कुछ ज़्यादा ही मीठे।

टेक्कड़ी, पेरियार वाइल्ड-लाइफ सेंक्चुरी या वन अरण्य के किनारे बसा दो-तीन किलोमीटर लम्बा एक छोटा-सा हिलस्टेशन है। यहाँ चारों तरफ तरह-तरह के मसालों और कॉफी के पौधों के खेत हैं। रास्ते में हम दीपा प्लानटेशन पर रुके। यहाँ एक गाइड ने हमें पहाड़ के ऊपर-नीचे घुमाते हुए तरह-तरह के पौधे दिखाए। इलायची, तेजपत्ता, दलचीनी, लौंग, सुर्वसुगन्धी, काली मिर्च, कोको (चॉकलेट) और कॉफी के अलावा तरह-तरह के फूलों और पत्तियों वाले पौधों को देख मन एकदम चकित हो उठा। ऐसा लगा कि केरल को ईश्वर का अपना देश (गॉड्स ओन कंट्री) कहकर जो प्रचारित किया जा रहा है, वह वाकई सच है।

टेक्कड़ी पहुँचने से पहले एक बड़ा झरना मिला। सड़क किनारे रुककर हमने पास की दुकान से काँच की अलमारी में रखा मसाला-बड़ा कॉफी के साथ खाया। दुकान पर कई अनोखे रंग-शक्ल के फल बिक रहे थे। इनमें से मैं सिर्फ रामबुटान को पहचानती थी। हरा काँटेदार लीची जैसा दिखता है यह। कुछ लोग बोतलों में कुछ बेच रहे थे। मुझे लगा वे इस तरह खुलेआम शराब कैसे बेच सकते हैं? पर पता चला कि उन बोतलों में दरअसल ताज़ा शहद था।

केरल में काफी लोग अँग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी भी जानते हैं। बम्बइया फिल्मों ने हिन्दी का असल में जितना प्रचार किया है, उतना शायद सरकार कभी नहीं कर सकती। हमारा ड्राइवर दिलीप, कोट्टायम में रहनेवाला पच्चीस साल का युवक था। वह टूटी-फूटी अँग्रेज़ी बोलता था। कई दिन बाद हमें समझ आया कि वह अँग्रेज़ी से ज़्यादा हिन्दी जानता था। वह कुछ तो स्वभाव से झेंपू था और कुछ वह शायद अपने मन की बात सिर्फ मलयालम में बोल सकता था। किताब की एक दुकान टेक्कड़ी में दिखी, तो मैंने दिलीप को अपने उपन्यास का मलयालम अनुवाद खरीदकर दिया। उसने कुछ खास प्रसन्नता नहीं दिखाई। मुझे लगा कि वह शायद ही इसे पढ़ेगा। दरअसल, मैं यह मानकर चलना चाह रही थी कि केरल में हर व्यक्ति कहानी-उपन्यास पढ़ता होगा!

हम सीधे टेक्कड़ी से सटे पेरियार बाघ अभयारण्य में घुस गए और झील में सैर का टिकट कटा लिया। डेढ घण्टे के नौका विहार में हमने किनारे पर चरने या पानी पीने आए जंगली भैंसों, सुअरों और बारहसिंगों के झुण्ड देखे। कारमोरेंट (एक तरह के जल-पक्षी) पानी में गड़े बाँसों पर बैठे अपने पंख सुखा रहे थे। झील के किनारे लाल रंग

की मिट्टी दूर-दूर तक फैली हरियाली के साथ झील के पानी का रंग ऐसा तीन रंगों का कैनवास बना रहा था कि मुझे लगा कि दुनिया की कोई झील इससे सुन्दर नहीं हो सकती। आकाश में कभी बादल, कभी सूरज की ढलती धूप से झील के चारों तरफ के पहाड़ कभी हरे तो कभी नीले दिख रहे थे।

संयोग से हमें पेरियार अभयारण्य की दीवार से सटा एक नया होटल रहने को मिला। हमारे कमरे के बरामदे से दूर-दूर का दृश्य देखा जा सकता था – जलकुम्भी के हज़ारों-हज़ार नीले मोरपंखी फूलों के पार घना जंगल और उसके पीछे दिखती पहाड़ियाँ अद्‌भुत सुन्दर लग रही थीं। मन में उम्मीद जगी कि क्या मालूम यहीं से हाथी या बाघ भी दिख जाए! पर, दिखा सिर्फ बारहसिंगों का झुण्ड। छोटी-सी जगह होने के बावजूद टेक्कडी में हमें एक गुजराती-मारवाड़ी होटल मिल गया। यहाँ जोधपुर के रसोइए ने घर जैसा खाना खिला दिया। यूँ तो हम इडली-डोसा-अप्पम-इडियाप्पम-उत्तपम से कभी नहीं उकताने वाले लोग हैं, पर फिर भी रोटी-सब्ज़ी-दाल खाकर हम तृप्त ज़रूर हुए।

दक्षिण भारत में जाएँ और हाथी से न मिलें, तो शायद कुछ अधूरा रह जाएगा। एलिफेंट जंक्शन नामक कॉफी के एक बागान में हाथियों पर बैठकर घूमने की व्यवस्था थी। लक्ष्मी हथिनी ने हमें केला खिलाने पर अपनी सूँड हमारे माथे पर रखकर खूब आशीर्वाद दिए। शाम को हम नरकासुर की कथा पर आधारित कथकली नृत्य का एक कार्यक्रम भी देख आए। शुरुआत में नृत्यकार ने सत्ताइस तरह की मुद्राओं और नौ तरह की भंगिमाओं के बारे में बताया। पास ही कराली नामक केरल का मार्शल आर्ट का शो चल रहा था। झाँककर देखा कि एक युवक दोनों तरफ से जलते डण्डे को तेज़ गति से घुमा रहा था।

सबसे ज़्यादा मज़ा आया वहाँ के कोको के पेड़ों से बनी घरेलू चॉकलेट खाकर। यह टेक्कड़ी के छोटे बाज़ार में जगह-जगह मिलती है। मसालों की दुकान से हम लौंग, इलायची, गरम मसाला, काली मिर्च, दालचीनी वगैरह खरीद लाए। इलायची के खेत के खेत टेकड़ी के चप्पे-चप्पे पर लगे हुए थे। पर, कलकत्ते में साढ़े नौ सौ रुपए किलो की दर से मिलने वाली इलायची वहाँ सिर्फ पचास रुपए सस्ती थी। डैक्कन हैराल्ड अखबार से पता चला कि हमारे अगले पड़ाव मन्नार के रास्ते में संतनापाड़ा नाम की जगह में बारह साल में एक बार खिलने वाले नीलकुरंजी के फूल खिले हैं। हम उछल पड़े। हमने तस्वीरें खींचीं और खुश मन से आगे चल पड़े। मन्नार के रास्ते में इलायची ही इलायची के खेत हैं। इलायची पौधे की जड़ के पास उगती है यह बात मैंने कभी सोची भी नहीं थी। इलायची के अलावा चाय बागान से पहाड़ियाँ ऊपर से नीचे तक इस कदर ढँकी हुई हैं कि मुश्किल से कहीं खाली जगह दिखती है।

मन्नार से बीसेक किलोमीटर दूर हम जिस होटल में रुके थे, वहाँ से पहाड़ियों के बीच अर्नायरनकल झील का बहुत सुन्दर दृश्य दिखाता है। एक छोटी-सी नदी पर छोटा-सा बाँध बनाकर बिजली पैदा की जाती है। यह झील बाँध के कारण बनी हुई है। पेरियार झील भी इसी तरह की झील है। केरल में पश्चिमी घाट की पहाड़ियों से तकरीबन चालीस नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं।

मन्नार में काफी बारिश हो रही थी। मानसून पूरे ज़ोरों परथा। बादल बार-बार झील को ढंक रहे थे। खिड़की से इसे देखना कितना अद्‌भुत था! दोपहर को हमने केरल का पारम्परिक खाना "सध्या" खाया। चटनियों, पापड़, अचार, सब्ज़ियों को मिलाकर कुल सत्ताइस चीज़ें केले के पत्ते पर परोसी जाती हैं। इसकी सुगंध और स्वाद के लिए दिव्य के अतिरिक्त कोई शब्द मन में नहीं आता।

केरल के खाने में नारियल का प्रयोग बंगाल की तुलना में बहुत अधिक है। बंगाल में तो नारियल का तेल सिर में लगाने के काम आता है, खाना पकाने में नहीं। नारियल के लड्डू के अलावा नारियल शाकाहारी बंगाली भोजन में सिर्फ चने की मीठी दाल में ही हमने खाया है।

हम घर से ऐसा सोचकर तो नहीं निकले थे, पर हम ऐन ओणम के अवसर पर केरल में थे। केरल के लोकप्रिय असुर राजा महाबली को विष्णु ने पाताल भेज दिया था। महाबली के पाताल से वापस केरल लौटने के मौके पर ओणम मनाया जाता है। क्विलोन के होटल में हमने एक व्यक्ति को महाबली के रूप में सजा हुआ देखा। वह हर आने-जाने वाले को आशीर्वाद दे रहा था। हर जगह रंग-बिरंगे फूलों का गलीचा (पूकालम) सजाया जाता है और चावल के पेस्ट से रंगोली मांडी जाती है। मृदंग और शहनाई का स्वर हवा में गूँजता रहता है। महाबली एक न्यायप्रिय राजा था। फिर उसे पाताल में क्यों डाल दिया गया – यह बात मन में घूमती रही। क्या दुनिया में राजनीति में हमेशा अन्याय होता आया है और अच्छे लोगों का मरना या हट जाना पड़ा है? महाबली नाम से ही ताकतवर लगता है। शायदइसीलिए विष्णु ने बौने ब्राह्मण का रूप धरकर उसकी दानवीरता का फायदा उठाते हुए उसे पाताल में भेजा था। तो क्या यह अच्छा होने की सज़ा थी?

मन्नार के पास ही मटुपट्टी बाँध से बनी कुण्डालये

सभी फोटोः अलका सरावगी

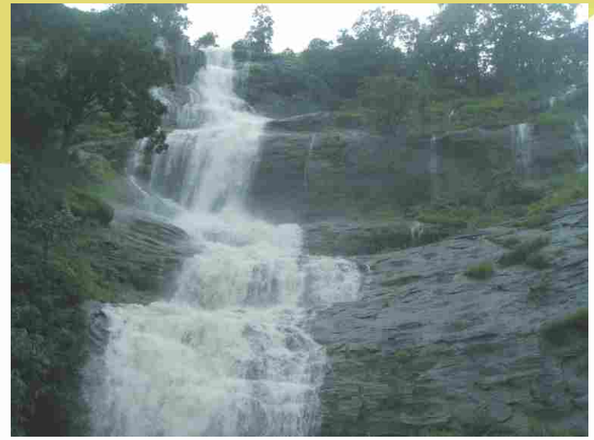

झील है, जिसका नीला पानी और सघन वन बहुत मनमोहक हैं। बारिश के कारण ठण्ड बढ़ गई थी और मेरे पास इससे बचने लायक कपड़े नहीं थे। हमारेजर्मन मित्र की बात याद हो आई कि बुरा मौसम कुछ नहीं होता, सिर्फ बुरे कपड़े होते हैं।

हमारा अगला पड़ाव कुमारकॉम था। यह केरल का प्रसिद्ध बैकवॉटर है। मन्नार से निकले तो रास्ते में इतने झरने मिले कि लगा यह तो झरनों का देश है। हम सब की स्वर्ग की कल्पना से शायद झरनों का यह संगीत ज़रूर जुड़ा हुआ है। बारिश में धुलते चाय के बगीचे पहाड़ों में ऊपर से नीचे छाए हुए इस कल्पना में सुर मिलाते हैं या कहिए कि रंग भरते हैं।

कुमारकॉम केरल की सबसे बड़ी झील वैमवनाड झील के किनारे बसा एक गाँव है। यहाँ सारे रास्ते छोटी-बड़ी नहरों और झीलों से आपस में जुड़े हुए हैं। यह सोचकर मज़ा आ रहा था कि हम होटल से स्पीडबोट में बैठकर सीधे समुद्री शहर अलेप्पी तक चालीस मिनट में पहुँच सकते हैं। अगले दिन सुबह-सुबह हम कुमारकॉम पक्षी अभयारण्य देखने मोहनदास गाइड के साथ निकले। रास्ते में फिसलन इतनी थी कि चिड़ियों को देखने के लिए गरदन उठाना मुश्किल हो रहा था। चलते-चलते हम एक पतली नहर के पास पहुँचे। वहाँ एक नाविक खाली नाव लिए बैठा था। पूछने पर पता चला कि वह स्थानीय लोगों को यहाँ सवहाँ पहुँचाता है। उसकी नाव में बैठकर हमने तरह-तरह के जलपक्षी – कारमोरेंट,

हेरॉन, परपल हेरॉन और बीसों नीले किंगफिशर देखे। पता ही नहीं चला और झील के स्थिर पानी और किनारे की स्तब्ध हरियाली से गुज़रते हुए हम छोटी नहर से, बड़ी नहर से झील होते हुए अपने होटल तक पहुँच गए। केरल को वाकई पूरब का वेनिस ठीक ही कहा गया है।

कुमारकॉम कोट्टायम शहर से एकदम नज़दीक है। मोहनदास के अनुसार यहाँ रबर प्लांटेशन से अमीर बने बहुत से लोग रहते हैं। रास्तों के आसपास नए बने छोटे-छोटे सुन्दर बंगलों के रखरखाव और सजावट से केरल की समृद्धि छिपी नहीं है। धान के हरे-भरे खेत, रबर, कॉफी, चाय, मसाले – प्रकृति ने केरल को धन-धान्य से परिपूर्ण बनाया है। ऊपर से हर परिवार का एक न एक व्यक्ति खाड़ी के देशों में या पश्चिम में धन कमाने के लिए गया हुआ है। उन्हीं दिनों पॉल मुनहूट नामक एक अत्यन्त धनी युवा व्यवसायी की हत्या से अखबारों में हलचल मची हुई थी। शायद अधिक धन से जुड़ी क्रूरता से यह स्वर्गनुमा धरती भी अब अपराध, खून, हिंसा की बुराइयों से बची नहीं है।

कुमारकॉम के गाँव में घूमने निकले तो नहर के किनारे कपड़े धोते, सिल पर चटनी पीसते, मछली साफ करते, नौका चलाते खुशमिजाज़ लोग दिखे। हर घर में कोको और नारियल के पेड़ों से आय भी होती है और हरियाली भी। किन्तु पानी के इस देश में भी पानी की किल्लत है। यह जानना अचम्भे में डालता है। दरअसल नहरों का पानी सिर्फ बरसात के दिनों में मीठा होता है, बाकी समय समुद्री पानी से यह खारा हो जाता है। गन्दगी के कारण लोग नहर में नहाने के बाद सरकारी पानी से नहाते हैं।

आदमी ने प्रकृति को कहीं सुरक्षित नहीं छोड़ा है। और उसका दण्ड भी उसे ही भरना है।

ओणम के दिन अलेप्पी में नेहरू ट्रॉफी की नौका-दौड़ होती है। इसमें सर्पनुमा नौकाओं को पचास से डेढ़ सौ तक लोग खेते हैं। हम ओणम के दिन तो मन्नार में थे, पर कुमारकॉम के रास्ते में संकरी नहर में भी हमने एक नौका दौड़ देखी। अगले दिन कोट्टयम में बड़ी दौड़ होनी बाकी थी। नदी के दोनों तरफ हज़ारों लोगों के साथ हमने कोट्टयम की 110वीं रेस देखी। रंगीन पोशाक पहने नाविकों का एक साथ हाथ चलाना और जनता का उत्साह जैसे सम-गति में चल रहा था। अखबार से पता चला कि हर ज़िले-गाँव की छोटी-बड़ी नौका-दौड़ कई दिनों तक चलती है।

कुमारकॉम में हमारा होटल एक छोटी झील के किनारे था। पीछे विशाल वेमवनाड झील थी। सुबह से चिड़ियों का जैसे अनोखा ऑर्केस्ट्रा सुनाई देता था। झक सफेद जल-मुर्गी जब पानी के एकदम नज़दीक से उड़कर अपनी छाया पानी में झलकाते हुए जाती, तो लगता अगर हमारी आँखों ने यह नहीं देखा तो फिर देखा क्या? केरल की प्रकृति में एक अलग तरह का स्पंदन है। एक अलग-सी धड़कन। जिसे महसूस करने के लिए हमारे मन को ऋषि बनना होता है भले ही कुछ क्षणों के लिए ही।